Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.3982, Volume 07, No. 04, October, 2017, pp. 319-322

अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण तथा शैक्षिक उपलब्धि पर शहरीकरण के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. श्रीमती किरन तिवारी*

मनुस्मृति के अनुसार विद्यार्थी शिक्षा का एक चौथाई भाग गुरू से, एक चौथाई भाग सहपाठियों से, एक चौथाई भाग अपनी स्वयं की बुद्धि से तथा एक चौथाई भाग अपने अनुभव से सीखता है। विद्यालय एवं उसमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों को विद्धानों ने समाज का दर्पण माना हैं। यदि विद्यालय के बालक अनुशासित, सौम्य, स्वस्थ व प्रतिभाशाली होंगे तो जिस समाज से वह बालक विद्यालय में आया है निश्चित ही यह माना जाता है कि वह समाज भी अनुशासित होगा। विद्यालय व समाज से उस राष्ट्र का इतिहास, कला व संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरण हो रहा है, जिसमें शिक्षक–शिक्षार्थी–अभिभावक और विद्यालय, परिवार और समाज का वातावरण महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है। प्राचीन काल से कमजोर वर्गों को अनेक पहलुओं पर अयोग्य समझा गया है। यद्यपि नगरीय क्षेत्र में शिक्षा और सामाजिक जागृति के कारण परिस्थितियां बदल रहीं हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ पर कमजोर वर्ग उच्च वर्ग पर निर्भर है स्थिति बिल्कुल विपरीत है। उनके निम्न शैक्षिक और आर्थिक स्तर के कारण समाज भी उनका पक्ष नहीं लेता। बालक की शिक्षा पर उसके माता–पिता और गृह–वातावरण का प्रभाव पड़ता है। जिन विद्यार्थियों में वातावरण के अनुरूप अध्ययन से उचित आदतें हैं, एवं सम्यक संलग्नता है, वे ही बालक उन ग्रामीण बालकों की तुलना में अधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। अतः यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों की शिक्षा पर प्रभाव डालने वाले कारकों की खोज की जाए।

'शिक्षा का अधिकार' अधिनियम 26 अगस्त, 2009 को गठित किया गया जो 1 अप्रैल, 2010 से प्रभावी हो गया, जिसका अभिप्राय राज्य द्वारा मानव को प्रदत्त वे समस्त साधन व सुविधाऐं हैं जो उसे निर्बाध शिक्षा ग्रहण करने हेतु आवश्यक हैं। शैक्षिक अवसरों की समानता में कुछ चुनौतियाँ विद्यमान हैं जैसे भौगौलिक दूरियाँ, प्रादेशिक असंतुलन, जनपदीय असंतुलन, आर्थिक असंतुलन सामाजिक विडम्बनाएँ, लैंगिक भेदभाव तथा व्यसायोन्मुख शिक्षा का प्रभाव आदि। भौगोलिक विषमताओं के कारण आदिवासी और घुमक्कड़ जाति के विद्यार्थी शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

समस्या का औचित्यः

शिक्षा रूपी चिमटी ही अशिक्षा तथा सामाजिक बुराइयों रूपी केकड़ों को हमारे देश और समाज के दामन से हटा सकेगी। यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि परिवार और समाज ही विद्यार्थी के उन्नतिशील व्यक्तित्व की रीढ़ व विकास की आधार शिला है। वर्तमान युग में जब विद्यार्थी के सम्पूर्ण विकास में परिवार और समाज एक सशक्त भूमिका अदा कर रहे है। तो शोधार्थिनी के मन में यह जिज्ञासा स्वयमेव उत्पन्न हुई कि शहरीकरण की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्नयन में क्या भूमिका है? ग्रामीण व शहरी वातावरण में वे कौन–कौन से तत्व हैं, जिनमें दोनों में भिन्नता दृष्टि गोचर होती है। यही जानने का प्रयास प्रस्तुत शोध में किया गया है। जो इस प्रकार है–

"अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण व शैक्षिक उपलब्धि पर शहरीकरण के प्रभाव का अध्ययन" का चयन किया गया।

शोध अध्ययन के उद्देश्यः

शोधकर्त्री ने शोध हेतु अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए हैं–

* प्राचार्या, ब्राईटमून शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोविन्दगढ़, चौमू, जयपुर, राजस्थान।

- अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।
- अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।
- अनुसूचित जाति के शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके शहरीकरण के प्रभाव का अध्ययन।
- अनुसूचित जाति के शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके शहरीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
- अनुसूचित जनजाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।
- अनुसूचित जनजाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।
- अनुसूचित जनजाति के शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके शहरीकरण के प्रभाव का अध्ययन।
- अनुसूचित जनजाति के शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके शहरीकरण के प्रभाव का अध्ययन।

शोध की परिकल्पनाऐं

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाऐं की गईं हैं–

- अनुसूचितजाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी स्तर के आधार पर सामाजिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी स्तर के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी स्तर के आधार पर आय के घटकों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के आधार पर सकारात्मक सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के आधार पर सामाजिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी स्तर के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के आधार पर आय के घटकों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के आधार पर आय से सम्बन्धित सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों में ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के आधार पर उनके पारिवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का छात्र एवं छात्राओं के आधार पर शैक्षिक वातावरण के घटकों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का निजी एवं सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के आधार पर शैक्षिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का निजी एवं सरकारी विद्यालयों के आधार पर आय से सम्बन्धित सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का निजी एवं सरकारी विद्यालयों के आधार पर सामाजिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति के आधार पर सामाजिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

परिसीमाएं

प्रस्तुत शोध में जयपुर सम्भाग के चार जिलों–जयपुर, अलवर, सीकर, दौसा का ही चयन किया गया है। इनमें ऐसे किशोर–किशोरियाँ जो कक्षा दसवीं तथा ग्यारहवीं में पढ़ते हैं, उनके सामाजिक वातावरण को अध्ययन के लिए लिया गया है।

उपकरण

- सामाजिक वातावरण मापनी हेतु– डॉ. जगदीश पाण्डेय व एम.सी. जोशी।
- आर्थिक मापनी हेतु– श्री सुनील कुमार उपाध्याय और अलका सक्सैना द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया।
- शैक्षिक उपलब्धि के लिए – विद्यार्थियों के कक्षा–दसवीं के अंकों को ही आधार माना है।

न्यादर्श

अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि पर शहरीकरण के प्रभाव जानने हेतु बहुस्तरीय न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श चयन के लिए यादृच्छिकीय आधार का प्रयोग किया।

कुल 800 विद्यार्थी

अनुसूचित जाति 400								अनुसूचित जनजाति 400							
ग्रामीण 200				शहरी 200				ग्रामीण 200				शहरी 200			
जयपुर		सीकर		दौसा		अलवर		जयपुर		सीकर		दौसा		अलवर	
छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा
25	25	25	25	25	25	25	25	25	25	25	25	25	25	25	25

- टी–टेस्ट,
- मध्यमान–सहसम्बन्ध।
- मानक विचलन आदि सांख्यिकीय गणना के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये।

शोध के निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित निष्कर्ष आए :–

- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी स्तर के आधार पर सामाजिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- अनुसूचितजाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी स्तर के आधार पर आय से सम्बन्धित सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के आधार पर सकारात्मक सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के आधार पर सामाजिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी स्तर के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के अनुसार आय के घटकों में सार्थक अन्तर पाया गया।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के आधार पर आय से सम्बन्धित सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के आधार पर उनके पारिवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का छात्र एवं छात्राओं के आधार पर शैक्षिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का निजी एवं सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के आधार पर शैक्षिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का निजी एवं सरकारी विद्यालयों के आधार पर आय से सम्बन्धित सार्थक अन्तर पाया गया।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का निजी एवं सरकारी विद्यालयों के आधार पर सामाजिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों का अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति के आधार पर सामाजिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया।

शोध अध्ययन की उपयोगिता

समाज के विभिन्न वर्ग के व्यक्ति प्रस्तुत शोध से निम्न प्रकार लाभान्वित हो सकते हैं–

- **अध्यापकों हेतु:** इस अध्ययन से अध्यापक अनुसूचित जाति एवं जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक स्थिति से अवगत हो सकेंगे। शिक्षक छात्र एवं छात्राओं को अध्ययन–अध्यापन कराते समय इस अध्ययन से प्रभावी कदम उठा सकेंगे। जिन कारणों से अनुसूचित जाति एवं जनजाति पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- **शिक्षण संस्थाओं हेतु:** शिक्षण संस्थाएँ वर्तमान शोध के परिणामों से लाभ उठा सकती हैं। निजी एवं सरकारी विद्यालयों की सामाजिक स्थिति और विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पर गौर कर सकती है, अन्तर के कारणों का पता लगा सकती हैं। ग्रामीण व शहरी विद्यालयों से प्राप्त निष्कर्ष का पता लगा सकती हैं। नकारात्मक सामाजिक तथा सकारात्मक सामाजिक परिणाम प्राप्त होने का पता लगा सकती हैं। अनुसूचित जाति एवं जनजाति का तुलनात्मक परिणाम प्राप्त कर उनकी शैक्षिक उपलब्धि व शैक्षिक अभिवृत्ति में सुधार कर सकती हैं। नकारात्मक सामाजिक वातावरण से विद्यार्थियों को बचा सकती हैं।
- **विद्यार्थियों के लिए:** प्रस्तुत शोध विद्यार्थियों की वस्तुस्थिति जानने के लिए एक आधार का कार्य करेगा। शहरी व ग्रामीण विद्यार्थी ज्ञात कर सकेंगे कि किन–किन आयामों का प्रभाव सकारात्मक पड़ता है और किन–किन का नकारात्मक। वे अपने सामाजिक वातावरण से किस प्रकार प्रभावित होते हैं, यह जान सकेंगे।
- **अभिभावकों के लिए:** प्रस्तुत शोध अभिभावकों के लिए अपने बच्चों की स्थिति जानने का आधार बनेगा। अभिभावक जान सकेंगे कि किन–किन सामाजिक बातों का सकारात्मक प्रभाव उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ेगा। इससे वे अपने सामाजिक वातावरण में सुधार कर सकेंगे। समाज के नकारात्मक वातावरण से बालकों को दूर रखने का प्रयास करेंगे, जिससे उनमें सकारात्मक और धनात्मक प्रभाव पड़ सकेगा। किसी भी अध्ययन की सार्थकता तभी है जबकि उसके परिणामों से लोग लाभान्वित हों। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ते हैं? ये जानने का इस शोध के माध्यम से प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- मिश्रावी.के. 2007 : वर्तमान शिक्षा व्यवस्था एवं भावी पीढ़ी का भविष्य।
- खोलिया, जगदीश चन्द्र : हाईस्कूल स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
- ग्रीन बी.ई.एण्ड गोल्डवेरी डब्ल्यू ए 1986: पेरैन्टिंग एण्ड सोशियोलाइजेशन ऑफ चिल्ड्रन डेवलपमेण्टल साइकोलॉजिकल वॉल्यूम, 25
- मिश्राके.एस. : इफैक्ट और चिल्ड्रन्स परसैप्शन ऑफ होम एण्ड स्कूल एन्वायरन्मेण्ट ऑन देयर साइन्टिफिक क्रिएटिविटी, राजस्थान यूनिवर्सिटी।
- पिलाग्यवथी, टी.: शैक्षिक उपलब्धि का योग्यता, सृजनात्मकता और चिन्ता के मध्य सम्बन्ध, अन्नामलाई यूनिवर्सिटी।
- जोशी सुभाषचन्द्रः हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के वास्तविक शैक्षिक उपलब्धि के अनुभवगत ग्राह शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन।
- देसाई,बी. पटेल.ए. 1981: आश्रम स्कूल्स ऑफ गुजरात इन इवैल्यूटेटिव स्टडी अहमदाबाद ट्राइबल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग सेन्टर, गुजरात विद्यापीठ।
- एडीगर मार्लो 1984: द सबस्टीट्यूट टीचर इन रीडिंग इन्शटक्शन, सब जनरल फॉर पर्सनल रेस्पासिबिल फॉर सबस्टीट्यूट,टीचिंग।
- गौरीसन. कार्ल.सी. साइकोलॉजी ऑफ अडोलसैन्स।
- ऑलम, एम.एम : भौक्षिक उपलब्धि का सामाजिक आर्थिक स्तर,चिन्ता स्तर और उपलब्धि उत्साहवर्धन से सम्बन्ध, उत्तर प्रदेश के मुस्लिम और गैर मुस्लिम विद्यालयी छात्रों का तुलनात्मक अध्ययन (पीएच.डी. एजूकेशन) अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी
- बोरियल आर.एन.पी.: शैक्षिक उपलब्धि एवं प्रेरणा पर सामाजिक वर्ग की पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन
- त्रिवेदी, वी.ए.: स्टडीऑफ द रिलेशनशिप ऑफ पेरेन्टल एटीट्यूड सोशियो इकानामी बैंक ग्राउण्ड्स एण्ड फिलिंग्स ऑफ सिक्योरिटी एमंग इन्टरमीडिएटस्टूडेन्ट्स एण्ड देअर एकेडमिक एचीवमेन्ट लखनउ यूनिवर्सिटी 1987।

❑❑❑